एक ही सत्ता के साथ सर्व धर्म एकमत

परमात्मा के स्वरूप को लेकर सभी एकमत ही रहे हैं। लेकिन उसके स्वरूप को बताने का तरीका सबका अलग-अलग रहा। जितनी भी महान आत्माएं, पीर, पैगम्बरों ने परमात्मा के स्वरूप को बताया, उसमें कहीं न कहीं निराकार का भाव अवश्य छुपा हुआ था। इसमें मुख्य बात हमें ये समझनी है कि परमात्मा कोई देहधारी मनुष्य हो नहीं सकता, वो होगा तो देहातीत ही। उसके स्वरूप का वर्णन प्रमुख पैगम्बरों ने जो किया, वो निम्नवत है...

ईसा के भाव में 'दिव्य ज्योति रूप'

ईसा मसीह(जिसस क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा कि 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। जिसस ने कभी ये नहीं कहा कि 'आई एम गॉड', उसने परमात्मा को लाइट के स्वरूप में ही बताया।

ज्योति 'जेहोवा' का हुआ साक्षात्कार

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

सिक्ख धर्म ने माना निराकार को

इसी प्रकार सिक्खों के धर्म स्थापक गुरू नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है। जबकि ज्योति स्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरू गोबिंद सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं, बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

'होली फायर' में भी निराकार

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है, तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

रहस्य गिरजाघर का

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण के भी पूज्य निराकार शिव

महाभारत युद्ध के पहले विजय हेतु कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की, तथा साथ-साथ श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई व युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

'संग-ए-असवद्' के रूप में माना

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे 'संग-ए-असवद्' कहते हैं। ये भी एक जानने का विषय है कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है। उसको वे लोग 'नूर-ए-इलाही' भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन में भी निराकार का समर्थक

जापान में शिवोनिज़्म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊँचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' भी कहते हैं। उसका नाम दिया है 'चिंकोनसेकी' जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी में देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

श्रीराम ने भी पूजा शिव को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता होती? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा शिव का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

शंकर के भी परमपिता 'शिव'

कुछ लोग 'शिव' और 'शंकर' में अंतर नहीं समझते। वे कहते हैं कि शिव और शंकर एक ही इष्ट के दो नाम हैं। अब प्रश्न उठता है कि 'शिवलिंग' नामक प्रतिमा और 'शंकर' की देवाकार मूर्ति, ये दो अलग, भिन्न-भिन्न रूप वाले स्मरण चिन्ह क्यों हैं? किसी व्यक्ति के पिता को उसके मित्र 'गुप्ता जी' अथवा 'रमेश चन्द्र जी' और उसके माता-पिता 'रम्मू' अथवा 'मेशी' कहकर पुकारते हों, यह तो हो सकता है परंतु उस व्यक्ति का छायाचित्र अथवा कलाकार द्वारा बनाई उसकी प्रतिमूर्ति एक ही रूप की होगी न? बाल रूप की और वृद्ध रूप की दो अलग रूप वाली फोटो भी हो सकती हैं जिनमें काफी अंतर दिखाई देता हो परंतु दोनों सशरीर, सकाय अर्थात् पिण्ड धारण किये हुए तो होंगे न? परंतु शिव पिण्डी तो अण्डाकार ही होती है और शंकर की मूर्ति अंग-प्रत्यंग सहित ही सदा स्थापित और पूजित होती है, यहां अगर उस देवाकार मूर्ति का कोई अंग थोड़ा भी खण्डित हो जाए तो उस अंग-भंग मूर्ति को पूजा के योग्य ही नहीं माना जाता। फिर शिव की मण्डलाकार प्रतिमा को तो 'ज्योतिर्लिंगम' ही माना जाता है जबकि शंकर जी को यह संज्ञा नहीं दी जाती। अन्यश्च, शंकर जी को तो समाधिस्थ ही प्रायः दिखाया जाता है जो इस बात का प्रतीक है कि वे स्वयं किसी ध्येय के ध्यान में मन को समाहित किये हुए हैं जबकि शिव पिण्डी में कोई ऐसा भाव प्रदर्शित न होने से वह स्वयं ही परम-स्मरणीय है। अतः दोनों का अंतर प्रत्यक्ष ही है। फिर भी इसको एक ओर रख कर कुछ लोग शिवलिंग को पृष्ठ-भूमिका में देकर उस पर शंकर की मुखाकृति अंकित कर देते हैं और अन्य कई चित्रकार शंकर जी से ज्योतिर्लिंग को प्रकट होता हुआ दिखा देते हैं और पुराणों में तो ऐसी भी कथायें अंकित हैं कि 'शिव' 'शंकर' जी का ही एक शरीर-भाग है। सचमुच, यह तो मनुष्य की अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि वे एक ओर खण्डित काया वाले देव की पूजा नहीं करते और दूसरी ओर वे किसी एक ही शरीर-भाग की पूजा की बात कहते हैं। स्पष्ट रूप से यह बात विवेक-विरुद्ध है।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल
Peace of Mind
CABLE Network
Digital Cable
hathway SITI DEN GTPL FASTWAY JioTV
TATA Sky 1065 airtel 678
videocon 1221 dishtv 1087
TATA Sky 1084
1060
GTPL 578

अगर शिव-शंकर एक हैं तो हम ऐसा क्यों नहीं कहते...

हमेशा ही 'शिवरात्रि' शब्द का उच्चारण किया जाता है, 'शंकररात्रि' तो कभी भी किसी ने नहीं कहा होगा। उन्हें सदा शिव कहते हैं। इसीलिए सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहा जाता है, सत्यम् शंकरम् सुंदरम् नहीं कहते हैं। उसी तरह 'त्रिमूर्ति शिव' कहते हैं, 'त्रिमूर्ति शंकर' नहीं। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के रचयिता शिव हैं इसलिए उन्हें ही त्रिमूर्ति कहा गया है। उसी तरह शंकर देव, आदि देव, महादेव कहा जाता है जबकि शिव परमात्माय नमः कहते हैं, अर्थात् शंकर देवता हैं जबकि शिव परमात्मा। ॐ नमः शिवाय कहते हैं, ॐ शंकराय कभी नहीं कहते, क्योंकि सभी सर्वोच्च सत्ता, सर्व आत्माओं और त्रिदेव के भी पिता परमात्मा शिव को प्रणाम करते हैं। इसी प्रकार हम देखें तो 'शिव' का अर्थ कल्याणकारी होता है, जबकि 'शंकर' विनाश के देवता हैं, यही उनका कर्त्तव्य है। जबकि परमात्मा शिव अपने त्रिदेवों द्वारा स्थापना, पालना और विनाश का कार्य करवाते हैं। अतः ये सभी तर्क इस बात को सिद्ध करते हैं कि परमात्मा शिव अलग हैं महादेव शंकर अलग। इस रहस्य को स्पष्ट करने का ध्येय यही है कि परमात्मा एक हैं, निराकार हैं, वो हम सर्व आत्माओं के पिता हैं, किसी एक धर्म के नहीं। और हम अपने असली पिता को पहचान उनके साथ अपने सम्बंध जोड़कर, उनसे वो सारे अधिकार और सच्चा वर्सा प्राप्त कर सकें जिसके हम सभी बच्चे अधिकारी हैं।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता